अंडा

प्रताप सहगल

अण्डा

कहानी

प्रताप सहगल

अण्डा

अपने स्कूटर को पवन ने पार्किंग में लगाया और बाड़ा हिन्दू राव अस्पताल की ऊँची इमारत को देखने लगा। जब वह यूनिवर्सिटी आता तो कई बार इधर से ही निकलता था। रिज का रास्ता उसे खुला और कुदरती खुशबू से भरा लगता था। तब दिल्ली में इतनी भीड़ नहीं थी कि कहीं भी चैन से चलने या ड्राइव करने की जगह न मिले। दो-एक बार वह अपनी प्रेमिका के साथ भी इधर घूमने आ चुका था। उसने अस्पताल को कभी इस नज़र से देखा नहीं था कि कभी उसके अन्दर भी जाना पड़ सकता है। आज उसे उस अस्पताल के अन्दर जाना था।

मुख्य-द्वार पर कदम रखते ही दवाओं की तीखी गन्ध से उसका माथा झनझना गया। उसने जेब से रूमाल निकालकर नाक पर रखकर गन्ध को रूमाल से बाँधने की कोशिश की, जैसे कि वह गन्ध को रूमाल में बाँधकर रख सकता था। जैसे-जैसे वह अस्पताल के अन्दर घुसता गया, दवाओं के साथ मरीज़ों की गन्ध भी घुलने लगी। गलियारे के एक कोने पर 'गमकते' शौचालय की गन्ध। यानी सब मिल-जुलकर गन्ध की काकटेल बन रही थी। थोड़ी ही देर में गन्ध उसकी नसों में समा गयी और उसने नाक पर रखा रूमाल हटा लिया।

वह दायें-बायें जनरल वार्ड खोजने लगा। ग्राउंड फ्लोर पर ही उसे जनरल वार्ड मिल गया। बेड नं. 8 वार्ड में घुसते ही दिखा। बेड के पास ही चमन चाचा और बेला चाची खड़े थे। चमन चाचा उसकी ओर ऐसे लपके जैसे उससे मिलने के लिए वे न जाने कितनी सदियों से उसका इन्तज़ार कर रहे थे। पवन ने हल्का सा झुककर उन्हें, फिर चाची और आखिर में बेड पर लेटे एक कंकाल को प्रणाम किया।

पवन दरअसल इस कंकाल को देखने ही आया था। सुबह ही चमन चाचा ने अपने बड़े भाई मदन को फोन पर बताया था कि 'पिता जी बहुत दिनों से बीमार हैं और पिछले तीन दिनों से अस्पताल में हैं। पता नहीं कितने दिन ओर चलें एक बार आकर मिल लें।'

मेघराज के तीन बेटे थे। मदन, चमन और कमल। मदन यूँ तो खुद बिस्तर से लगा था। पूरी तरह से अपनी पत्नी और बच्चे पर आश्रित, पर चाहता तो एक बार मिलने जा सकता था, लेकिन उसने सुविधाजनक रास्ता चुना। अपने दामाद पवन को बुलाकर कहा कि वह अस्पताल जाकर उसके पिता को देख आये। जाना तो पवन की पत्नी भी चाहती थी, लेकिन वह अपने दो छोटे-छोटे बच्चों को कहाँ छोड़ती। सो अन्ततः यह ज़िम्मेदारी पवन पर ही आयी। छोटा भाई कमल सुबह ही अस्पताल आया था और थोड़ी देर रुककर अपने काम पर निकल गया।

पवन ने देखा जनरल वार्ड के बेड नं. 8 पर एक नर कंकाल आँखें मूँदे, सीधा लेटा हुआ था। हालाँकि रिश्ते में मेघराज पवन का दादा-दामाद ही ठहरता था, पर इससे पहले उसने मेघराज को सिर्फ़ एलबम में ही देखा था। पवन खड़ा सोच ही रहा था कि वह क्या करे, चमन चाचा ने औपचारिकता निभाते हुए पूछा- ''कुछ लोगे पवन।''

''नहीं, नाश्ता लेकर ही निकला हूँ।''

चमन चाचा ने दायें-बायें झाँका, जैसे वे कुछ चुराने की तैयारी कर रहे हों, फिर पत्नी की ओर संकेत भरी नज़रों से देखा और मुख़ातिब हुए पवन की ओर-''ऐसा है, मुझे जाना है...रोज़ ही देर हो जाती है...यह चल नहीं सकता...समझ रहे हो?''

''जी'', पवन ने चमन का मंतव्य जान लिया था।

''मैं बैंक हो के आता हूँ...तब तक।''